2

गाय की चोरी

पाठ-परिचय

प्रस्तुत **हास्य-व्यंग्य** कथा में लेखक ने महागप्पी मुंशी प्यारेलाल को अपना केंद्रबिंदु बनाया है। इस कथा में लेखक ने बताया है कि मुंशी प्यारेलाल का शौक अपने को हर घटना का चश्मदीद गवाह सिद्ध करना था। पड़ोसन की गाय चोरी हो जाने पर जीवन में पहली बार अपने को उस घटना से जोड़ने से पहले तो कतराए, फिर गाय की खोज में इस हद तक शामिल हुए कि बेभाव की खाकर भी गाय खोजकर ही दम लिया।

मुंशी प्यारेलाल यह कभी बर्दाश्त नहीं कर पाते थे कि शहर में कोई वारदात हो जाए, मारपीट हो जाए या कोई दान दे दे और उन्हें पता न हो। सिर्फ़ पता ही नहीं, उसकी पूरी-पूरी सूचना उनके पास न हो! उनके लिए यह बात बड़ी हैरानी की होती थी कि कोई घटना हो जाए और वे वहाँ स्वयं मौजूद न हों।

वे उस स्थिति की कल्पना ही नहीं कर सकते थे, जिसमें कोई दुख या विपत्ति टूट पड़ी हो और उसमें उन्होंने हाथ न बँटाया हो, झगड़े को रफ़ा-दफ़ा न किया हो, घायल को अस्पताल तक छोड़ने न गए हों।

एक ही वक़्त में यदि दो घटनाएँ हो जाएँ तो पता नहीं कैसे जोड़-जाड़कर वे तुक बैठाने की कोशिश करते कि वे किन-किन ज़रियों से अचानक और आश्चर्यजनक रूप से वहाँ पहुँच ही जाते थे।

वैसे वे अपने घर के बरोठे में चश्मा लगाए, खाट पर पालथी मारकर बैठे, 'शमा' की पहेलियाँ भरते रहते हैं और आते-जाते को चश्मे के भीतर से चोर नज़र से ताकते रहते हैं।

पास के कटरे में बरफ़वाले सुखलाल ने किसी बात पर अपनी पत्नी पर हाथ उठाया था। खबरें तो यहाँ बिजली की तरह फैलती हैं। डॉक्टर साहब मंडी से लौटे तो मुंशी जी से दुआबंदी हुई और बात चल पड़ी।

मुंशी प्यारेलाल कह रहे थे, "भई यह बड़ा ज़ुल्म है। इन लोगों की आदत ऐसी होती है कि चार पैसे पास होते ही दिमाग सातवें आसमान पर चढ़ जाता है। सुक्खू ने बिला-वजह अपनी औरत का सिर फोड़ दिया, वह अस्पताल में पड़ी है।"

"कब?"

"अरे यही सवेरे, वह तो इत्तफ़ाक की बात थी कि मैं मुख़्तार साहब से मिलने जा रहा था। बहुत दिनों से मुकदमे के कागज़ात उनके पास पड़े थे। रामनारायण के फाटक तक पहुँचा तो शोरगुल मचा हुआ था। सुखलाल अपनी बीवी को लाखों गालियाँ दे रहा था। भला बताइए, औरतज़ात से इस तरह पेश आना चाहिए? और बस, गालियों के बाद उसने डंडा उठा लिया। मैं हक्का-बक्का देखता रह गया। इतने में दर्शन ज़बरदस्ती किवाड़ खोलकर भीतर घुसा तो चार-छह डंडे उसके भी पड़ गए। भई, तब हमसे नहीं रहा गया। सब खड़े-खड़े मुँह ताक रहे थे। मैं फिर हया-शर्म छोड़कर भीतर घुस गया। सुखलाल किसी तरह बस में नहीं आता था। पर मेरी काठी..."

कहते-कहते उन्होंने हसरत से अपनी बाँहों पर निगाह डाली और बोले, "फिर उसकी औरत को सीधे अस्पताल भिजवाया और सुक्खू को दर्शन के सुपुर्द करके लौटा।"

और जब कोई ऐसी घटना हो जाती जिसका वाकई उन्हें कोई पता पहले से न चलता, और वे अपना संबंध उससे शीघ्र ही न जोड़ पाते तो उन्हें ईमानदारी से पछतावा होता। फ़ौरन निकल पड़ते और इधर-उधर बहसियों की तरह घूमकर जो कुछ पता चलता, मालूम कर लाते। बस, तभी उनको संतोष होता।

कोई बात यदि मुंशी प्यारेलाल को पहले से मालूम हुई तो फिर उसका और भी अधिक प्रचार होता, क्योंकि वे तंबाकूवाले की दुकान से लेकर कोयला ठेकेदार के गोदाम तक और वकील साहब के नौकरों से लेकर मुक्की कपड़ेवाले की दुकान तक, जो भी मिलता उससे चर्चा छेड़कर कुछ-न-कुछ जानने की कोशिश करते। फिर जितना मालूम होता उसमें अपने से कुछ जोड़कर सुनाते जाते और आगे की बात मालूम करते जाते।

यह क्रम तब तक चलता रहता जब तक वह बात बिलकुल उनकी अपनी न हो जाती और वे तब तक शांत न बैठते जब तक उसके सहनायक बनकर उस बात को सुना न लेते।

एक रात ऐसा हुआ कि छप्परवाली बूढ़ी की गाय चोरी हो गई। बूढ़ी तो सोती रही और कोई गाय खोलकर ले गया। मुंशी प्यारेलाल बगलवाले चबूतरे पर चटाई बिछाए सो रहे थे। सुबह जब बूढ़ी ने रोना-पीटना शुरू किया तो लोग जमा हो गए। मुंशी जी की तभी आँख खुली। माजरा समझ में आते ही धोती की काँछ लगाते हुए छप्पर में जमा लोगों के बीच घुस गए। बूढ़ी रो रही थी और एक आदमी पूछ रहा था, "यहाँ बँधी थी... और तुम कहाँ सो रही थीं?"

मुंशी जी फ़ौरन अपनी तरफ़ बात मोड़ते हुए बोले, "अरे सभी यहीं सोते हैं, मैं खुद यहीं चबूतरे पर सो रहा था..." फिर बात को बड़े अंदाज़ से घुमाते हुए बोले, "यह गाय ज़रूर रात दो बजे के करीब खोली गई है। कुछ आहट उस वक्त हुई थी, मैं तो बड़ा चौकन्ना सोता हूँ। इधर-उधर देखा, पर कुछ नज़र नहीं आया। सोचा हवा होगी। उसके थोड़ी देर बाद फिर खुरखुराहट सुनाई पड़ी... अब यह तो उस वक्त नहीं सोचा कि कोई गइया खोले ले जा रहा है, पर लगा मुझे ऐसा कि जैसे गाय चल रही है। यही खयाल किया कि शायद अपने थान पर उठक-बैठक मचाए है, मच्छर परेशान कर रहे होंगे...."

"तो पुलिस में खबर करो न, आज यह अजीब बात इस गली में सुनाई पड़ी है...." भीड़ में से किसी ने कहा।

मुंशी जी ने पुलिस का नाम सुना तो थोड़ी आँखें मिचमिचाईं, जैसे आँखें पूरी तरह से खोल रहे हों, फिर अगुआ बनने के नाते बोले, "अरे, उस वक्त ज़रा-सा यह ध्यान भर आ जाता तो भला गाय निकलने पाती। लेकिन एक बात यह और है कि चोर गइया को उधर मैदान के रास्ते ले गए हैं, इधर से जाते तो... मैं तो जाग ही रहा था... लेकिन..."

"थाने में रपट करो।" कोई साहब बोले। सबने हाँ में हाँ मिलाई।

थानेदार तहकीकात और मौका मुआइना के लिए आया तो मुंशी जी को बयान के लिए पुकारा गया। मुंशी प्यारेलाल निकल तो आए पर उनका चेहरा फक था। लगता था जैसे बड़ा ज़ब्र करके बाहर आए हैं। जब थानेदार ने उनसे पूछा कि आपको जो कुछ गाय की चोरी के मामले में मालूम है वह सब बता जाइए, तो मुंशी प्यारेलाल का बदन काँपने लगा और आँखें फैल गईं। उन्होंने जैसे असह्य पीड़ा झेलते हुए अपने चारों ओर खड़े लोगों को देखा और एक क्षण के लिए खामोश हो गए। जब थानेदार ने दोबारा पूछा तो उनका बयान कुछ इस तरह था :

"मैं तो हुज़ूर भीतर मकान में सो रहा था। दरअसल बात यह हुई कि सुबह के आसपास एक बड़ा डरावना सपना देखा। घर सुनसान था, सो तड़के ही चटाई लेकर यहाँ लुढ़क गया। घर में बड़ा डर लगता था... जब सवेरे आँख खुली तो जो सब लोग बात कर रहे थे, वही मैंने भी दोहरा दी थी..." मुंशी जी कहते जा रहे थे और उनकी गरदन नीचे झुकती जा रही थी। नज़र एकदम ज़मीन में गड़ाए हुए उन्होंने बड़ी मुश्किल से कहा था, "हुज़ूर मैंने और कुछ नहीं देखा।"

इसके बाद मुंशी जी शाम को ही दिखाई पड़े। उनके चेहरे पर एक अजीब शिकस्त की परछाईं थी, जैसे खुद अपने से हार गए हों। वे उस समय एक ऐसा आदमी खोज रहे थे, जो उन्हें हिकारत से न देखे और वे उसके सामने दिल का सारा गुबार निकाल दें। कोई ऐसा मिले जो सिर्फ़ आज उनकी बात पर यकीन कर सके।

जब गली से डॉक्टर साहब गुज़रे तो चलते-चलते बोले, "मुंशी जी, कम-से-कम आपको तो ऐसा नहीं करना चाहिए था।"

मुंशी जी ने सुना और अपने घर में घुस गए। अकेले बैठे-बैठे न जाने क्या-क्या सोचते रहे। तभी बगलवाले मकान से मुनसरिम साहब की कड़कड़ाती हुई आवाज़ उनके कानों में पड़ी, "नहीं है दूध, तो भूखों

मरने दो... मेरे पास एक पाई भी नहीं है। जो उधार देने को राज़ी हो उसके घर से बाँध लो दूध... पैसे तभी मिलेंगे जब पेंशन आएगी।''

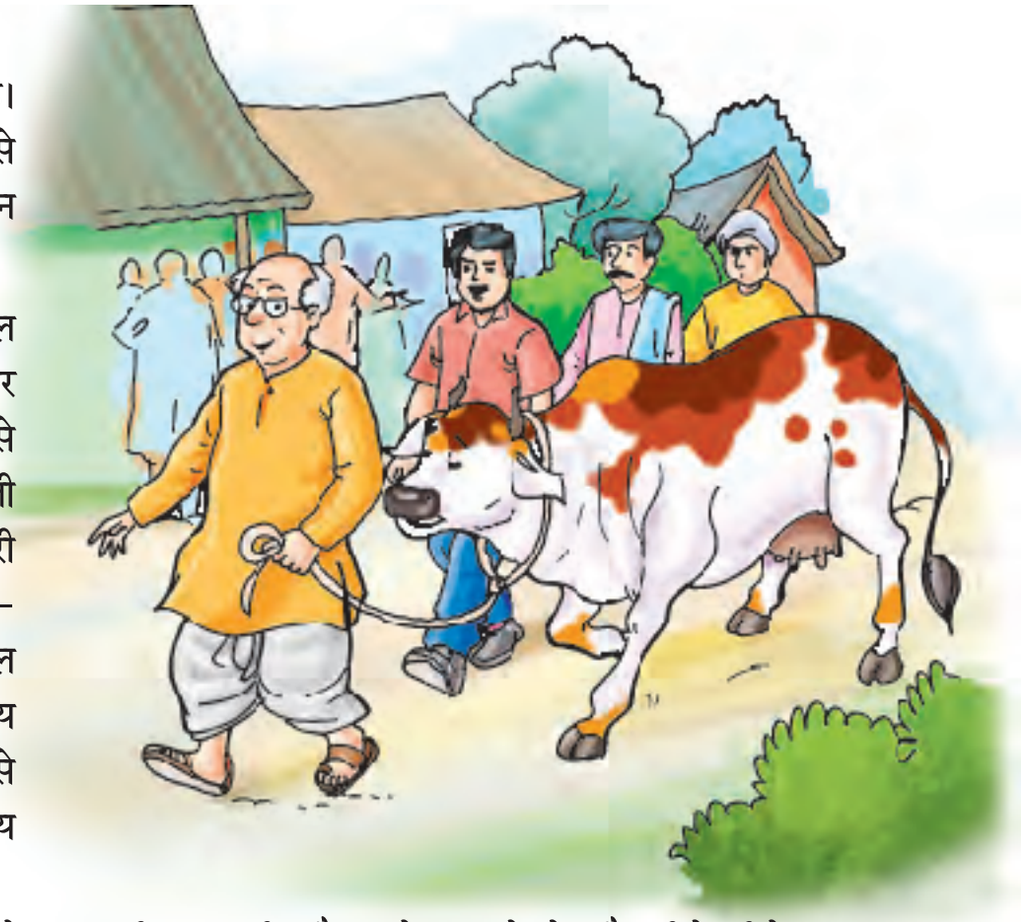

सुबह मुंशी जी मुँह-अँधेरे निकल पड़े। अगले चार-पाँच रोज़ घर पर नज़र नहीं आए। एक रोज़ नज़दीक के गाँव से कोई आया था तो पता चला कि मुंशी जी नगला में किसी अहीर के यहाँ फ़ौज़दारी करने गए थे। उनकी ज़मींदारी के पाँच-सात किसान भी उनके साथ थे। लाठी चल गई थी। सुना था कि अपनी चोरी की गाय का सुराग लगाकर वहाँ पहुँचे थे। कैसे पहुँचे, यह कोई नहीं जानता पर गाय उन्होंने ले ली थी।

उससे अगली सुबह मुंशी प्यारेलाल के साथ तीन आदमी और चले आ रहे थे और पीछे-पीछे गरदन झुकाए, पूँछ हिलाती बुढ़िया की गाय चली आ रही थी, जिसकी रस्सी उनके हाथ में थी।

गली में घुसते ही उन्होंने चारों तरफ़ निहारा। सभी लोग मुंशी जी और गाय को देखकर जमा हो गए थे। बूढ़ी अपनी गइया की गरदन और मुँह पर हाथ फेर रही थी और मुंशी प्यारेलाल लोगों की आँखों में विश्वास खोजते हुए बयान कर रहे थे, ''पुलिस भला क्या कर सकती थी? मैं तो पहले ही जानता था। जो काम करना हो, अपने बूते पर उठाना चाहिए। अरे साहब, क्या गाँव था! डकैतों का... खूनियों का... राक्षस-जैसे आदमी हैं वहाँ के। पर सुराग तो लगता ही है... कैसे-न-कैसे पहुँचा वहाँ। मेरी नज़र गड़ ही गई! बस, लाठियाँ निकल आईं...''

कहते-कहते उन्होंने अपनी बाँह खोल दी थी जो आज सचमुच लाठियों की मार से सूजी हुई थी।

—कमलेश्वर

जीवन-परिचय

कमलेश्वर
(1932-2007)

कमलेश्वर जी का जन्म 6 फरवरी, 1932 को उत्तर प्रदेश के मैनपुरी में हुआ। इन्होंने कहानी लेखन, पत्रकारिता के अलावा फ़िल्मों और धारावाहिकों की पटकथाएँ लिखीं। 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास पर इन्हें 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार मिला। 'राजा निरबंसिया', 'क़स्बे का आदमी' (कहानी संग्रह), 'खोई हुई दिशाएँ', 'काली आँधी' (उपन्यास) और 'चंद्रकांता' धारावाहिक की पटकथा इनकी अन्य प्रमुख कृतियाँ हैं। 27 जनवरी, 2007 में फरीदाबाद में हृदय गति रुकने से इनका निधन हो गया।

शब्द-संपदा

बर्दाश्त = सहन करना। **वारदात** = घटना। **दुआबंदी** = नमस्कार, राम-राम करना। **इत्तफ़ाक** = अचानक। **किवाड़** = दरवाज़ा। **बहसियों** = बात-बात पर बहस करने वालों। **छप्परवाली** = घास-फूस की छत वाली। **खुरखुराहट** = एक तरह की हलकी आवाज़। **अगुआ** = आगे आने वाला। **तहकीकात** = जाँच-पड़ताल। **शिकस्त** = हार। **मौका-मुआइना** = घटनास्थल को देखना। **ज़ब्र करके** = मजबूरी में, दबाव में। **असह्य** = जो सहन न किया जा सके। **गुबार** = मन में जमा गुस्सा, दुख।

अभ्यास प्रश्न

हास्य-व्यंग्य कथा से .....

1. दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर के सामने ✓ लगाइए :

क. मुंशी प्यारेलाल के लिए कौन-सी बात बड़ी हैरानी की होती थी?

(i) कोई घटना हो जाए और वे वहाँ स्वयं मौजूद न हों। ☐

(ii) कोई घटना हो जाए और उसकी पूरी सूचना उनके पास न हो। ☐

(iii) कोई घटना हो जाए और उसको रफ़ा-दफ़ा करने में हाथ न बँटाया हो। ☐

ख. मुंशी प्यारेलाल घर के बरोठे में चश्मा लगाए बैठे आते-जाते को किस नज़र से देखते रहते?

(i) दुआबंदी की नज़र से। ☐ (ii) शक की नज़र से। ☐

(iii) क्रोध भरी नज़र से। ☐ (iv) चश्मे के भीतर से चोर नज़र से। ☐

ग. मुंशी प्यारेलाल ने डॉक्टर साहब को रोककर क्या बताया?

(i) सुक्खू अपनी बीवी को लाखों गालियाँ दे रहा था। ☐

(ii) छप्परवाली बूढ़ी की गाय चोरी हो गई है। ☐

(iii) सुक्खू ने बिना कारण अपनी औरत का सिर फोड़ दिया, वह अस्पताल में पड़ी है। ☐

(iv) इनमें से कोई नहीं। ☐

घ. थानेदार तहकीकात और मौका मुआइना के लिए आया तो मुंशी जी का क्या हाल था?

(i) थानेदार को देखकर मुंशी जी स्वयं ही उनके सामने आकर खड़े हो गए। ☐

(ii) थानेदार के बुलाने पर मुंशी जी का चेहरा फक हो गया। ☐

(iii) मुंशी जी थानेदार के सामने गुमसुम एक अपराधी की तरह आकर खड़े हो गए। ☐

ङ. मैं फिर हया-शर्म छोड़कर भीतर घुस गया। सुखलाल किसी तरह बस में नहीं आता था। पर मेरी काठी...

(i) यहाँ 'मैं' किसके लिए आया है?

लेखक ☐ मुंशी प्यारेलाल ☐ सुखलाल ☐ गाँववाला ☐

(ii) 'मेरी काठी' का क्या अर्थ है?

घर ☐ बलशाली शरीर ☐ लाठी ☐ कोठी ☐

2. दिए प्रश्नों के विस्तृत उत्तर लिखिए :

क. मुंशी जी किसी घटना की जानकारी को विस्तार कैसे देते थे?

ख. बुढ़िया की गाय चोरी होने की खबर सुनते ही मुंशी जी ने क्या-क्या बातें बनाईं?

ग. मुंशी जी नगला के अहीर के यहाँ क्यों पहुँचे थे?

घ. मुंशी जी के लिए गाय का खोजना क्यों ज़रूरी हो गया था?

3. विचार कौशल :

क. मुंशी जी, कम-से-कम आपको तो ऐसा नहीं करना चाहिए था। मुंशी जी ने ऐसा क्या किया था?

ख. दूसरे के गाँव जाकर, लाठियाँ खाकर और गाय को लाकर मुंशी जी क्या साबित करना चाहते थे? इससे उनके चरित्र की किस विशेषता का पता चलता है?

4. किसने, किससे कहा?

क. "अरे यही सवेरे, वह तो इत्तफ़ाक की बात थी कि मैं मुख़्तार साहब से मिलने जा रहा था। बहुत दिनों से मुकदमे के कागज़ात उनके पास पड़े थे।" _____

ख. "यह गाय ज़रूर रात दो बजे के करीब खोली गई है।" _____

ग. "मैं तो हुज़ूर भीतर मकान में सो रहा था।" _____

घ. "मुंशी जी, कम-से-कम आपको तो ऐसा नहीं करना चाहिए था।" _____

भाषा से.....

1. विलोम शब्द लिखिए :

ठीक	× _____	गरम	× _____	योग्य	× _____	सामने	× _____
एक	× _____	भीतर	× _____	सवेरा	× _____	शांत	× _____

2. दिए उर्दू शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए :

तबाह	– _____	गैरहाज़िर	– _____	ज़रूर	– _____	खराब	– _____
शिकस्त	– _____	यकीन	– _____	गुबार	– _____	शायद	– _____
राय	– _____	माजरा	– _____	खबर	– _____	ज़मीन	– _____

रचनात्मक गतिविधियाँ

1. अमूल के दुग्ध उत्पादों और सहकारिता के विषय में परियोजना या प्रेज़ेंटेशन तैयार कीजिए।
2. कमलेश्वर की पुस्तक — 'मेरी प्रिय कहानियाँ' राजपाल एंड एंस द्वारा प्रकाशित लेकर पढ़ें।
3. आपकी हिंदी की पुस्तक, गणित की कॉपी, पानी की बोतल और खाने का डिब्बा विद्यालय में ही खो गया है। विद्यालय में खोया-पाया नोटिस बोर्ड पर लगाने के लिए सभी जानकारियाँ देते हुए सूचना लिखिए।